प्रेस विज्ञप्ति

नई दिल्ली, 01 जनवरी, 2026

भारत सरकार

Government of India

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एम. ओ. ई. एस.)

Ministry of Earth Sciences (MoES)

भारत मौसम विज्ञान विभाग

INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

2025 के दौरान भारत की जलवायु पर विवरण

Statement on the Climate of India during 2025

मुख्य बातें

2025 में, संपूर्ण भारत का सालाना औसत ज़मीन की सतह का हवा का तापमान 1991-2020 के दीर्घावधि औसत से +0.28°C ज़्यादा था। इससे 2025, 1901 में देश भर में तापमान का रिकॉर्ड शुरू होने के बाद से आठवां सबसे गर्म साल बन गया। रिकॉर्ड में सबसे ज़्यादा गर्म साल 2024 था, जब पूरे भारत में तापमान दीर्घावधि औसत से 0.65°C ज़्यादा था।

पूरे भारत का ऋतुनिष्ठ औसत तापमान सर्दियों (जनवरी-फरवरी) और मॉनसून पूर्व/प्री-मॉनसून (मार्च-मई) के सीज़न के दौरान दीर्घावधि औसत से अधिक रहा, जिसमें क्रमशः +1.17°C और +0.29°C की विसंगतियां थी। दक्षिण-पश्चिम मॉनसून (जून-सितंबर) और मॉनसून पश्चात/पोस्ट-मॉनसून (अक्टूबर-दिसंबर) सीज़न में, तापमान ऋतुनिष्ठ औसत तापमान के निकट थे, जिसमें क्रमशः +0.09°C और −0.10°C की विसंगतियां थी।

2025 में संपूर्ण देश में वार्षिक वर्षा (1274 मिमी) 1971-2020 की अवधि के लिए दीर्घावधि औसत (एलपीए/LPA) का 110% थी। ऋतु के हिसाब से, सर्दियों में बारिश सामान्य से नीचे (एलपीए/LPA का 52%) थी, जबकि अन्य तीनों ऋतुओं के दौरान वर्षा सामान्य से अधिक थी, जिसमें प्री-मॉनसून सीज़न, दक्षिण-पश्चिम मॉनसून सीज़न और पोस्ट-मॉनसून सीज़न में वर्षा दीर्घावधि औसत का क्रमशः 142%, 108% और 111% थी।

2025 के दौरान उत्तरी हिंद महासागर में चक्रवाती गतिविधि सामान्य थी, जिसमें साल के दौरान चार चक्रवाती तूफान (इनमें प्रत्येकी 2 चक्रवाती और गंभीर चक्रवाती) बने। ये सभी सिस्टम मॉनसून के बाद की ऋतु में बने: शक्ति /SHAKTI (1–7 अक्तूबर), मोंथा/ MONTHA (25–30 अक्तूबर), सेनयार/ SENYAR (25–27 नवंबर), और डिटवाह/ DITWAH (26 नवंबर–1 दिसंबर)। इन चार सिस्टम में से तीन (मोंथा, सेनयार और डिटवाह) बंगाल की खाड़ी में बने, जबकि एक (शक्ति) अरब सागर में बना। हालांकि, 2025 के दौरान, उत्तरी हिंद महासागर में कुल 11 अवदाब/डिप्रेशन (तीन गहन अवदाब/डीप डिप्रेशन सहित) बने, जो लगभग छह सिस्टम के जलवायु संबंधी सालाना औसत से ज़्यादा है।

इन चक्रवाती सिस्टम के अलावा, देश के अलग-अलग हिस्सों में कई चरम मौसम घटनाएं हुई, जिनमें बादल फटना, भारी बारिश, बाढ़. भूस्खलन, आकाशीय बिजली गिरना, आंधी-तूफान, सूखा और उनसे जुड़े खतरे शामिल है।

तापमान

2025 में देश का सालाना औसत ज़मीन की सतह का हवा का तापमान 1991–2020 के दीर्घावधि औसत से +0.28°C ज़्यादा था, जिससे यह साल 1901 में रिकॉर्ड शुरू होने के बाद से आठवां सबसे गर्म साल रहा (चित्र. 1)। रिकॉर्ड पर पांच सबसे गर्म साल, घटते क्रम में, 2024 (+0.65°C), 2016 (+0.54°C), 2009 (+0.40°C), 2010 (+0.39°C), और 2017 (+0.38°C) हैं। खास बात यह है कि 15 सबसे गर्म सालों में से 10 हाल के 15 साल की अवधि (2011–2025) के दौरान हुए हैं। 2016–2025 का दशक रिकॉर्ड पर सबसे गर्म दशक रहा, जिसमें दशक का औसत सालाना तापमान विसंगति (वास्तविक–LPA) 0.32°C थी। 1901 से 2025 तक की लंबी अवधि में, देश का औसत सालाना तापमान 100 साल में 0.68°C की सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण बढ़ती प्रवृत्ति दिखाता है (चित्र. 1)। इसी अवधि के दौरान, अधिकतम और न्यूनतम तापमान में भी महत्वपूर्ण गर्मी की प्रवृत्ति देखी गई, जो क्रमशः 100 साल में 0.89°C और 0.47°C की दर से बढ़ी।

पूरे भारत का औसत ऋतुनिष्ठ औसत तापमान सर्दियों की ऋतु (जनवरी - फरवरी) में सामान्य से अधिक था (1901 के बाद से रिकॉर्ड में सबसे ज़्यादा विसंगति +1.17°C देखी गयी), प्री-मॉनसून सीज़न (मार्च – मई) में +0.29°C, दक्षिण-पश्चिम मॉनसून ऋतु (जून – सितंबर) में +0.09°C और पोस्ट-मॉनसून सीज़न (अक्टूबर- दिसंबर) में सामान्य से थोड़ा नीचे -0.10°C का अंतर था।

2025 में, देश का मासिक औसत तापमान छह महीनों तक सामान्य से अधिक था, जबकि मई, जून, जुलाई, अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर में तापमान सामान्य से नीचे या सामान्य के करीब रहा, जिसमें क्रमशः -0.81°C, -0.18°C, -0.01°C, +0.07°C, -0.39°C और +0.01°C की विसंगति थी। फरवरी में देश का अब तक का सबसे अधिक मासिक औसत तापमान रिकॉर्ड किया गया, जिसमें +1.36°C की विसंगति थी, जबकि जनवरी में 1901 के बाद से रिकॉर्ड में दूसरा सबसे ज़्यादा तापमान दर्ज किया गया, जिसमें +0.98°C की विसंगति थी।

2025 में, फरवरी में अब तक का दूसरा सबसे ज़्यादा मासिक अधिकतम तापमान (+1.52°C) और सबसे ज़्यादा मासिक न्यूनतम तापमान (+1.20°C) रिकॉर्ड किया गया। जनवरी, सितंबर और अक्तूबर में 1901 के बाद से पांचवां सबसे ज़्यादा मासिक न्यूनतम तापमान विसंगतियां (+1.04°C, +0.63°C और +0.82°C, क्रमशः) दर्ज की गई।

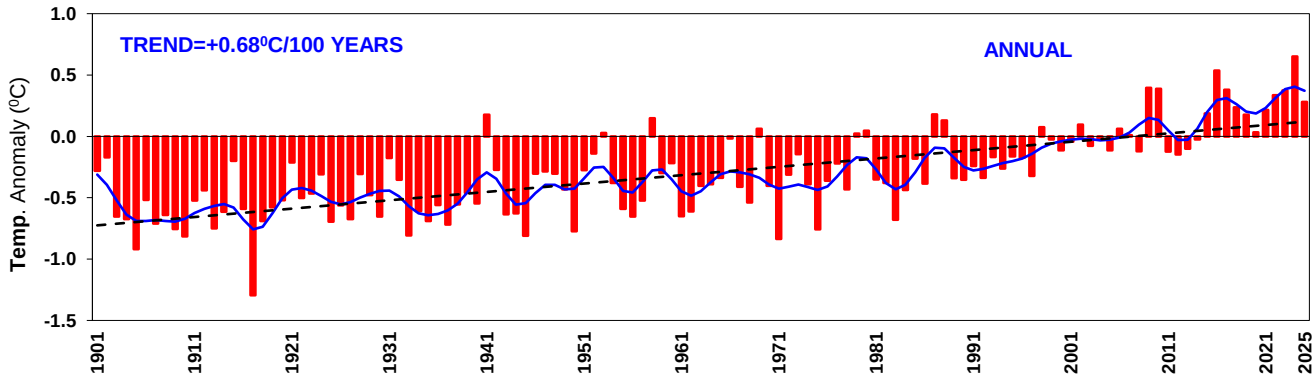

चित्र. 1: 1901-2025 की अवधि के लिए भारत में औसत वार्षिक भूमि सतह हवा के तापमान में विसंगतियाँ। विसंगतियों की गणना 1991-2020 की आधार अवधि के संबंध में की गई थी। बिंदीदार रेखा समय श्रंखला में रैखिक प्रवृत्ति को दर्शाती है। ठोस नीला वक्र एक द्विपद/बाइनोमियल फ़िल्टर के साथ बराबर किए गए उप-दशकीय समय पैमाने के बदलाव को दर्शाती है।

वर्षा / बारिश

2025 में, दक्षिण-पश्चिम मानसून जल्दी आगे बढ़ा, सामान्य तारीख से लगभग छह दिन पहले 13 मई को दक्षिण अंडमान सागर और निकोबार द्वीप समूह तक पहुँच गया। यह 24 मई को केरल में पहुँचा, जो इसकी सामान्य तारीख 1 जून से आठ दिन पहले था और 29 जून 2025 को पूरे देश में फैल गया, जो इसकी सामान्य तारीख 8 जुलाई से 9 दिन पहले था।

देश की सालाना बारिश अपने दीर्घावधि औसत (LPA) का 110% थी। मई में पूरे भारत में बारिश (126.7 मिमी) 1901 के बाद से सबसे ज़्यादा थी, जबकि प्री-मानसून सीज़न के दौरान कुल बारिश (185.8 मिमी) 1901 के बाद से तीसरी सबसे ज़्यादा थी। दक्षिण-पश्चिम मानसून सीज़न (जून-सितंबर) के दौरान, जो देश की मुख्य बारिश की ऋतु है, बारिश सामान्य से अधिक थी (LPA का 108%)। क्षेत्रीय रूप से, उत्तर-पश्चिम भारत में अपने LPA का 127% ऋतुनिष्ठ वर्षा हुई, मध्य भारत, दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत में क्रमशः 115%, 110% ऋतुनिष्ठ वर्षा हुई, जबकि पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत में अपने LPA का 80% ऋतुनिष्ठ वर्षा हुई। 1901 से पूरे देश में सालाना बारिश के प्रतिशत विचलन की समय श्रंखला/टाइम सीरीज़ **चित्र. 2** में दिखाई गई है।

2025 में उत्तर-पूर्वी/मानसून के बाद की ऋतु (अक्टूबर-दिसंबर) में पूरे देश में बारिश सामान्य से अधिक थी (LPA का 111%)। दक्षिण प्रायद्वीप के कोर क्षेत्र (जिसमें 5 उप-विभाग शामिल हैं, जैसे तटीय आंध्र प्रदेश और यनम, रायलसीमा, तमिलनाडु पुडुचेरी और कराईकल, दक्षिण आंतरिक कर्नाटक, और केरल और माहे) में उत्तर-पूर्वी मानसून सीज़न के दौरान ऋतुनिष्ठ वर्षा सामान्य थी (LPA का 102%)।

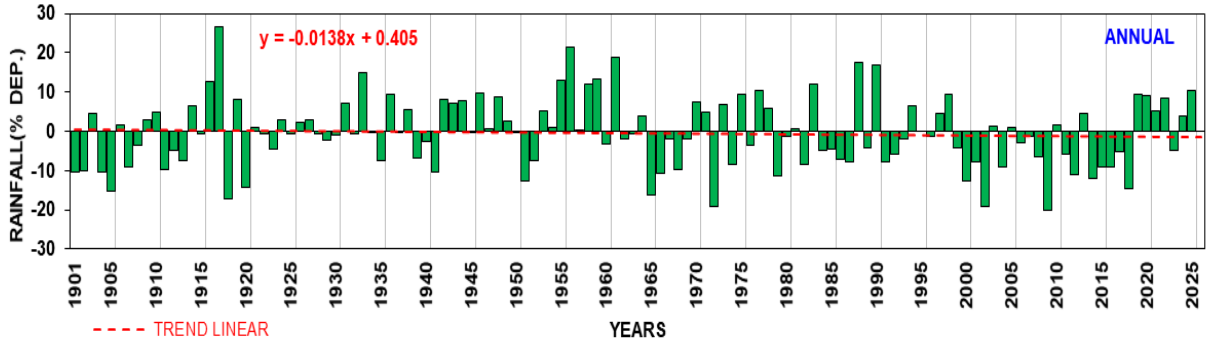

चित्र. 2: 1971-2020 के डेटा के आधार पर सामान्य से अखिल भारतीय वार्षिक वर्षा प्रतिशत विचलन की टाइम सीरीज़ (1901-2025)।

मानकीकृत वर्षा सूचकांक

मानकीकृत वर्षा सूचकांक (SPI) एक वर्षा-आधारित संकेतक है जिसका उपयोग सूखे और नमी की स्थितियों का आकलन करने के लिए किया जाता है। ऋणात्मक/नेगेटिव SPI मान सूखी स्थितियों को दर्शाते हैं, जबकि घनात्मक/पॉजिटिव मान नमी वाली स्थितियों को दर्शाते हैं, जिसमें बढ़ती तीव्रता अधिक गंभीरता को दर्शाती है। चित्र. 3 जनवरी से दिसम्बर 2025 की अवधि के लिए जिलेवार SPI मान प्रस्तुत करता है।

बारह महीनों के संचयी SPI मान गांगीय पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखण्ड, पश्चिम उत्तर प्रदेश,उत्तराखंड,हरयाणा,चंडीगड़,दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर और लदाख, राजस्थान राज्य, पश्चिम मध्य प्रदेश, गुजरात राज्य, कोंकण और गोवा, मध्य महाराष्ट्र, मराठवाडा, छत्तीसगढ़, तटीय आंध्र प्रदेश और यानम, तेलंगना, तमिलनाडु पुदेचेरी और करायकल, कर्नाटक राज्य औरकेरल और माहे के कुछ हिस्सों में अत्यधिक नमी/गंभीर रूप से नमी वाली स्थितियों को दर्शाते हैं, जबकि अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय, बिहार, पूर्व उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और दक्षिण आंतरिक कर्नाटक के कुछ हिस्सों में अत्यधिक सूखा/गंभीर रूप से सूखे की स्थिति देखी गई।`

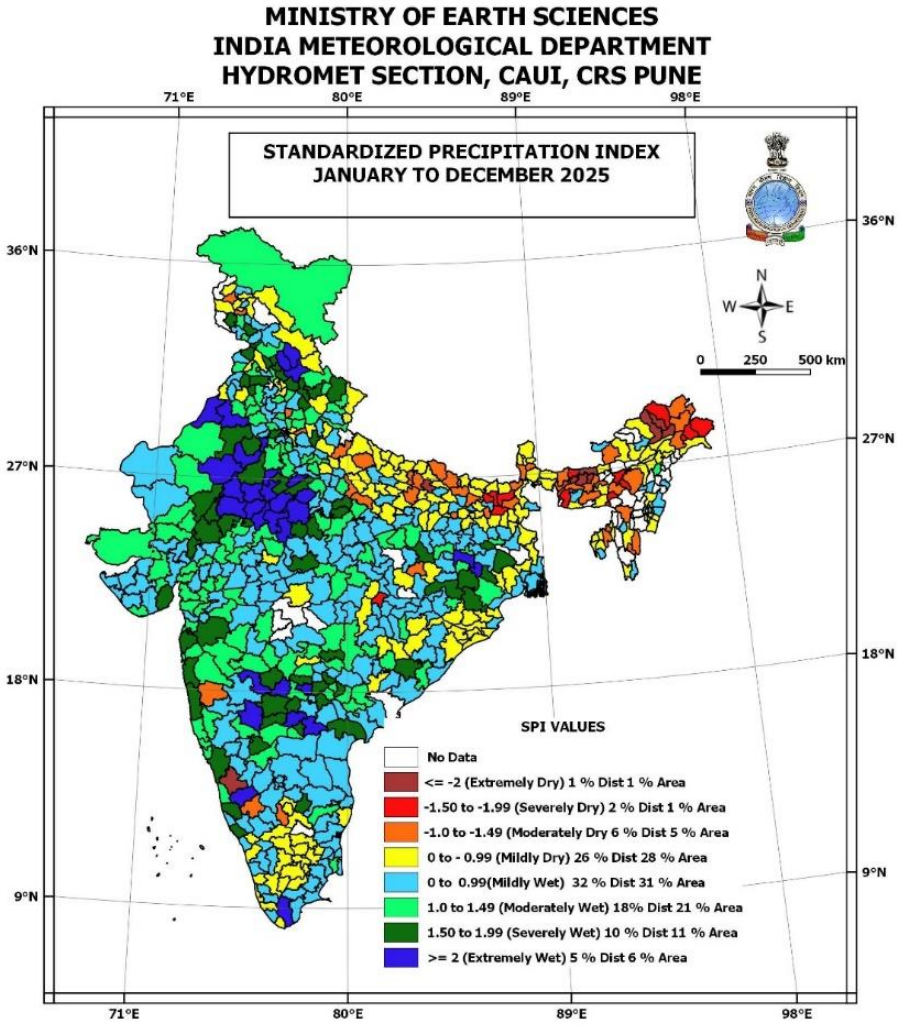

चित्र. 3: जनवरी से दिसम्बर 2025 के लिए **मानकीकृत वर्षा सूचकांक** (SPI)

चरम मौसम की घटनाओं का प्रभाव 2025

भारतीय महासागरों में उष्णकटिबंधीय चक्रवात:

2025 में, उत्तरी हिंद महासागर में चार चक्रवाती तूफान बने। इनमें से दो गंभीर चक्रवाती तूफान (शक्ति और मोंथा) और दो चक्रवाती तूफान (सेनयार और डिटवाह) थे। इनमें से ज़्यादातर सिस्टम बंगाल की खाड़ी (मोंथा, सेनयार और डिटवाह) में बने, जबकि एक (शक्ति) अरब सागर में बना। इन तेज़ सिस्टम के अलावा, 2025 के दौरान, उत्तरी हिंद महासागर में कुल 11 अवदाब/डिप्रेशन (तीन गहरे अवदाब/डीप डिप्रेशन सहित) बने, जो लगभग छह सिस्टम के जलवायु संबंधी वार्षिक औसत से ज़्यादा है।

ये सभी सिस्टम मानसून के बाद के सीज़न में विकसित हुए: शक्ति (1-7 अक्टूबर), मोंथा (25-30 अक्टूबर), सेनयार (25-27 नवंबर), और डिटवाह (26 नवंबर-1 दिसंबर)।

साल के दौरान बने इन चक्रवाती तूफानों और अवदाब/डिप्रेशन के रास्ते क्रमशः चित्र. 4(क) और (ख) में दिखाए गए हैं।

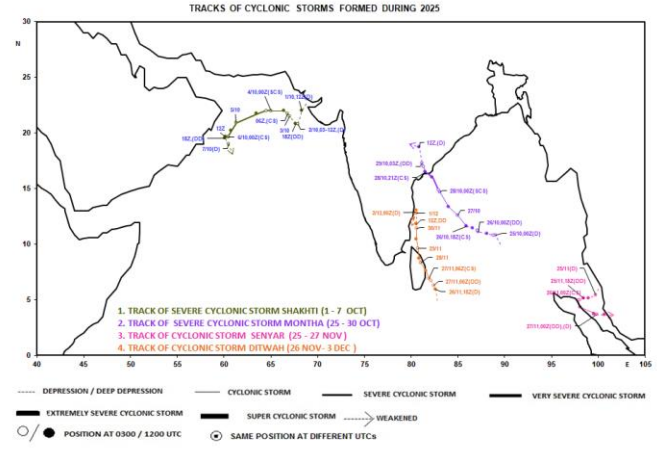

चित्र. 4क: 2025 के दौरान बने चक्रवातों के ट्रैक

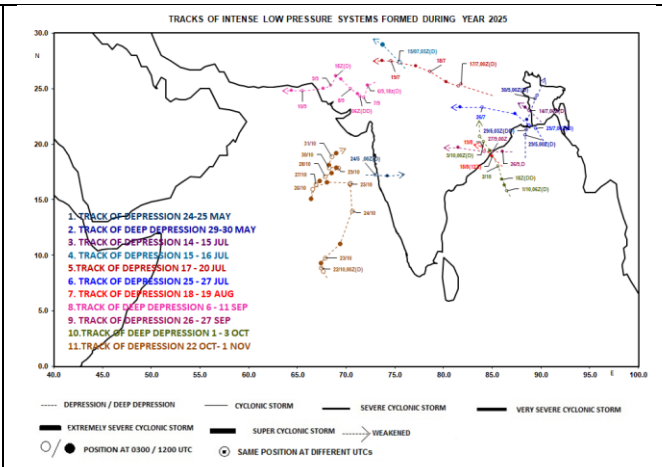

चित्र. 4ख: 2025 के दौरान बने अवदाब/डिप्रेशन के ट्रैक

चरम मौसम की घटनाएँ:

2025 में, उत्तरी हिंद महासागर में चार चक्रवाती तूफान बने। इनमें से दो गंभीर चक्रवाती तूफान (शक्ति और मोंथा) और दो चक्रवाती तूफान (सेनयार और डिटवाह) थे। इनमें से ज़्यादातर सिस्टम बंगाल की खाड़ी (मोंथा, सेनयार और डिटवाह) में बने, जबकि एक (शक्ति) अरब सागर में बना। इन तेज़ सिस्टम के अलावा, 2025 के दौरान, उत्तरी हिंद महासागर में कुल 11 अवदाब/डिप्रेशन (तीन गहरे अवदाब/डीप डिप्रेशन सहित) बने, जो लगभग छह सिस्टम के जलवायु संबंधी वार्षिक औसत से ज़्यादा है। साल के दौरान बने इन चक्रवाती तूफानों और डिप्रेशन के रास्ते क्रमशः चित्र. 4(क) और (ख) में दिखाए गए हैं।

ये सभी सिस्टम मानसून के बाद के सीज़न में विकसित हुए: शक्ति (1-7 अक्तूबर), मोंथा (25-30 अक्तूबर), सेनयार (25-27 नवंबर), और डिटवाह (26 नवंबर-1 दिसंबर)।

इनमें से, मोंथा और डिटवाह से कुछ नुकसान हुआ। गंभीर चक्रवाती तूफान मोंथा, जो मानसून के बाद के सीज़न में 25 अक्तूबर से 30 अक्तूबर के दौरान दक्षिण-पश्चिम और उससे सटे दक्षिण-पूर्वी बंगाल की खाड़ी में बना था, जिससे आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में 9 लोगों की जान चली गई। साथ ही, आंध्र प्रदेश में 42 पशुओं की मौत हो गई। जबकि, ओडिशा के कुछ जिले जैसे बालासोर/बालेश्वर, कटक, गजपति, गंजाम, जगतसिंहपुर, केंद्रपाड़ा, खुर्दा, मलकानगिरी, मयूरभंज, रायगड़ा प्रभावित हुए। चक्रवाती तूफान डिटवाह (26 नवंबर से 3 दिसंबर) जो मानसून के बाद के सीज़न में बंगाल की खाड़ी में बना था, उससे 2 लोगों की जान चली गई और तमिलनाडु में 582 पशुओं की भी मौत हो गई। हालांकि, चक्रवात शक्ति और सेनयार से किसी इंसान की जान नहीं गई और भारत में इनका कोई बड़ा असर नहीं हुआ। हालांकि, श्रीलंका में 28 नवंबर 2025 की सुबह द्वीप के पूर्वी तट पर आए चक्रवाती तूफान डिटवाह के कारण भारी बारिश, बड़े पैमाने पर बाढ़ और भूस्खलन से भारी नुकसान हुआ। इस तूफान से पूरे देश में इमरजेंसी जैसे हालात बन गए, जिससे सभी 25 जिलों में 407,594 से ज़्यादा परिवारों के 1.4 मिलियन से ज़्यादा लोग प्रभावित हुए। कुल 410 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि 336 लोग अभी भी लापता हैं। इसके साथ ही, चक्रवात सेनयार, जो 26 नवंबर 2025 को मलक्का जलडमरूमध्य (Strait of Malacca) में बना एक बहुत ही दुर्लभ उष्णकटिबंधीय चक्रवात था, जिसने तेज़ हवाओं के साथ-साथ भारी बारिश भी की। इस सिस्टम के कारण इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड में विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन हुआ, जिससे भारी जान-माल का नुकसान हुआ और बुनियादी ढांचे को भी बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचा।

चरम मौसम घटनाओं का प्रभाव:

उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के अलावा, देश के विभिन्न हिस्सों में चरम मौसम घटनाओं जैसे कि बहुत भारी बारिश, बाढ़, बादल फटने, भूस्खलन, आकाशीय बिजली गिरने, आंधी-तूफान, लू, शीतलहर आदि का अनुभव हुआ। इनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है। यहां बताई गई इन चरम घटनाओं के कारण हुई मौतें मीडिया और आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों की सरकारी रिपोर्ट पर आधारित हैं।

चित्र. 5(क) 2025 में चरम मौसम की घटनाओं के स्थानों को दर्शाने वाला एक नक्शा दिखाता है, जिससे जान-माल का नुकसान हुआ। चित्र. 5(ख) विभिन्न चरम मौसम की घटनाओं से होने वाली मौतों और उनके प्रतिशत का वितरण दिखाता है, चित्र. 5(ग) राज्य-वार मौतों का वितरण दिखाता है, और चित्र. 5(घ) 2025 के दौरान चरम मौसम की घटनाओं से प्रभावित जिलों की संख्या को दर्शाता है।

2025 के दौरान, विभिन्न चरम मौसम की घटनाओं के परिणामस्वरूप देश भर में लगभग 2,760 मौतें दर्ज की गईं। उत्तर प्रदेश सबसे बुरी तरह प्रभावित राज्य के रूप में उभरा, जहां बिजली गिरने, आंधी-तूफान, भारी बारिश, बाढ़, लू और शीतलहर के कारण 410 से अधिक मौतें हुईं। मध्य प्रदेश भी काफी प्रभावित हुआ, जहां बिजली गिरने, आंधी-तूफान, भारी बारिश, बाढ़, तेज हवाओं और लू से 350 से अधिक मौतें हुईं। महाराष्ट्र में 270 से अधिक मौतें हुईं, मुख्य रूप से भारी बारिश, बाढ़, बिजली गिरने, आंधी-तूफान, लू और ओलावृष्टि के कारण। झारखंड में 200 से अधिक मौतें दर्ज की गईं, जो ज्यादातर आंधी-तूफान से जुड़ी बिजली गिरने के साथ-साथ भारी बारिश और बाढ़ के कारण हुईं। इसके अलावा, बिहार में 174 मौतें, जम्मू और कश्मीर में 168, हिमाचल प्रदेश में 166, पश्चिम बंगाल में 146, उत्तराखंड में 117, ओडिशा में 110 और राजस्थान में 107 मौतें हुईं, जबकि शेष मौतें देश के अन्य हिस्सों से दर्ज की गईं।.

2025 में, भारी बारिश, बाढ़, बादल फटने और भूस्खलन से देश के अलग-अलग हिस्सों में 1,370 से ज़्यादा लोगों की जान चली गई। महाराष्ट्र में सबसे ज़्यादा मौतें हुईं, 210 से ज़्यादा मौतें हुईं, इसके बाद हिमाचल प्रदेश में 160 से ज़्यादा मौतें हुईं। जम्मू और कश्मीर में 155 से ज़्यादा मौतें दर्ज की गईं, जिसमें 14 अगस्त को किश्तवाड़ ज़िले में भारी बादल फटने, भारी बारिश और अचानक आई बाढ़ के कारण 63 लोगों की जान चली गई, और 27 अगस्त को रियासी ज़िले में भूस्खलन के कारण 32 लोगों की मौत हुई। मध्य प्रदेश में 150 से ज़्यादा मौतें हुईं, जबकि उत्तराखंड में 105 मौतें हुईं, जिसमें 5 अगस्त को खीर गंगा नदी के जल ग्रहण क्षेत्र/कैचमेंट एरिया में भारी बादल फटने के कारण 67 मौतें और कई लोग लापता हो गए। प्रभावित अन्य राज्यों में उत्तर प्रदेश (79 मौतें), राजस्थान (74), पश्चिम बंगाल (66), पंजाब (59), केरल (50) शामिल हैं, बाकी मौतें देश के अन्य हिस्सों में हुईं।

2025 में, आंधी और बिजली गिरने से देश के अलग-अलग हिस्सों में 1,310 से ज़्यादा लोगों की जान चली गई। सबसे ज़्यादा मौतें उत्तर प्रदेश (310 से ज़्यादा मौतें), मध्य प्रदेश (190 से ज़्यादा), झारखंड और बिहार (प्रत्येक में 170 से ज़्यादा), ओडिशा (100 से ज़्यादा), पश्चिम बंगाल (70 से ज़्यादा), महाराष्ट्र (लगभग 60) में हुईं, बाकी मौतें अन्य राज्यों में हुईं।

एक ही दिन की महत्वपूर्ण घटनाओं में शामिल हैं:

- 9-10 अप्रैल को, बिहार में आंधी-तूफान के कारण 45 लोगों की जान चली गई, जिसमें अकेले नालंदा ज़िले से 22 मौतें हुईं।
- 21 मई को, उत्तर प्रदेश (40), छत्तीसगढ़ (1), और हरियाणा (1) में 42 मौतें हुईं।
- 22 मई को, आंधी-तूफान के कारण उत्तर प्रदेश (22), मध्य प्रदेश (4), और राजस्थान (3) में 29 लोगों की जान चली गई।

आंधी-तूफान से जुड़ी बिजली गिरने से 13 से 17 जून के बीच कुल 152 मौतें हुईं, जिससे मध्य प्रदेश (63), उत्तर प्रदेश (44), बिहार (12), झारखंड (10), महाराष्ट्र (8), और गुजरात (5) प्रभावित हुए। इसके अलावा, 10 अप्रैल को बिहार (25), उत्तर प्रदेश (20) और झारखंड (5) में कुल 58 लोगों की मौत होने की खबर है।

2025 में उष्ण लहर/लू की वजह से देश के अलग-अलग हिस्सों में लगभग 35 लोगों की जान चली गई। उत्तर प्रदेश सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ, जहाँ 13 जून को एक ही दिन में लगभग 20 मौतें हुईं, इसके बाद तेलंगाना में 7 मौतें हुईं। बाकी मौतें पश्चिम बंगाल, ओडिशा, केरल, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में हुईं।

तूफ़ान, बर्फ़बारी, शीतलहर, ओलावृष्टि और धूल भरी आँधी जैसी अन्य चरम मौसम की घटनाओं ने भी अलग-अलग इलाकों को प्रभावित किया, जिससे जान-माल का नुकसान हुआ, फ़सलों, पशुधन और सरकारी और निजी संपत्ति को नुकसान पहुँचा।

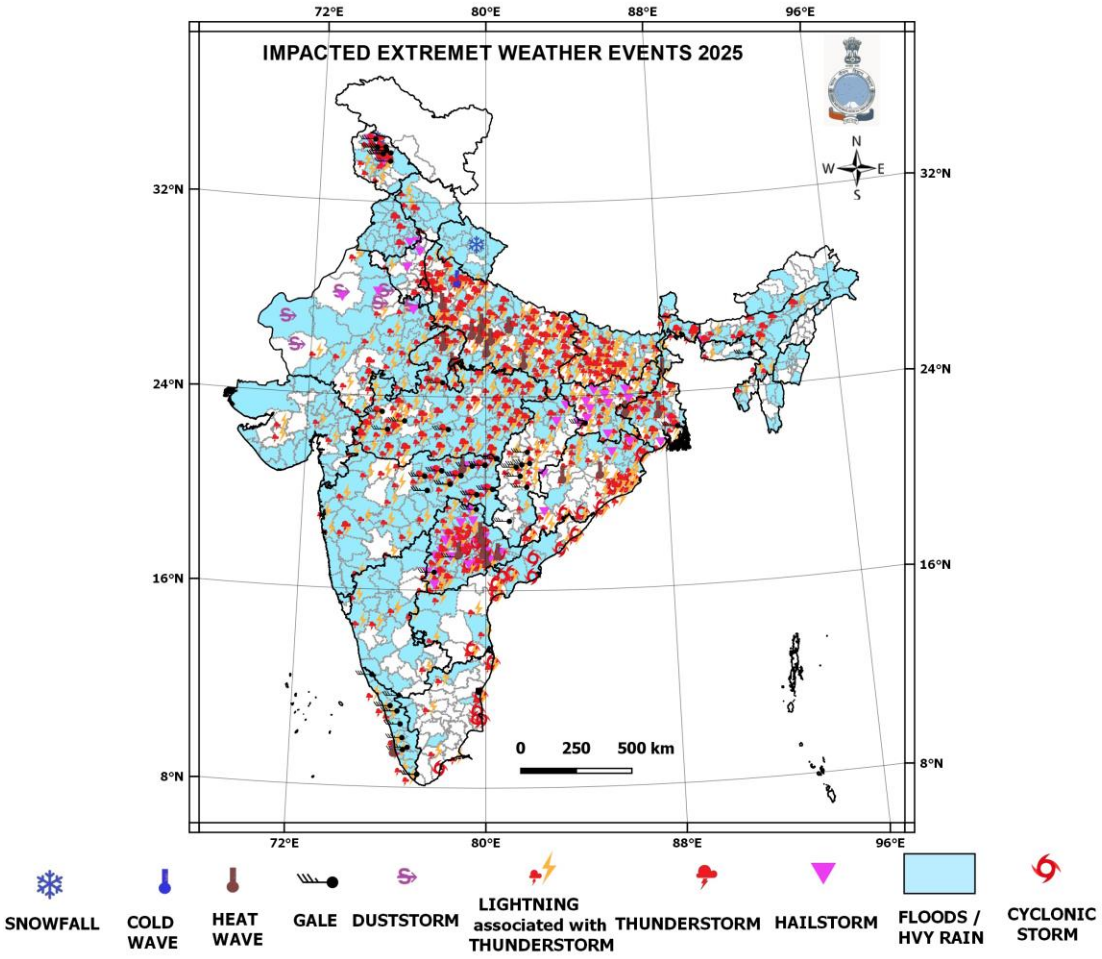

चित्र. 5(क): 2025 में हुई प्रमुख चरम मौसम घटनाएँ, जिनके कारण जान-माल का नुकसान हुआ।

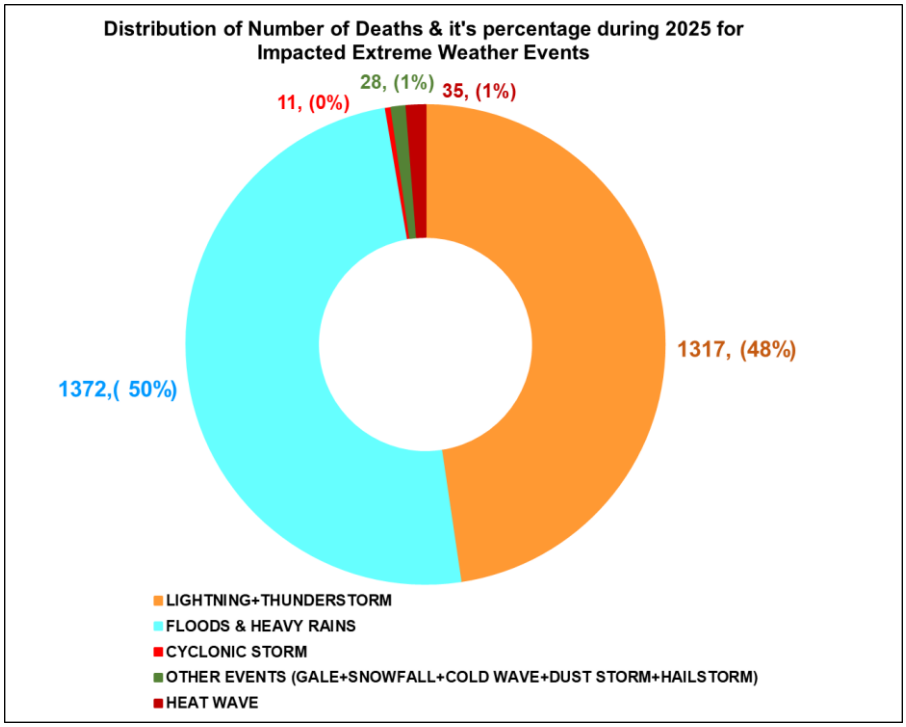

चित्र. 5(ख): 2025 के दौरान अलग-अलग चरम मौसम की घटनाओं के कारण होने वाली मौतों की संख्या और उसके प्रतिशत का वितरण।

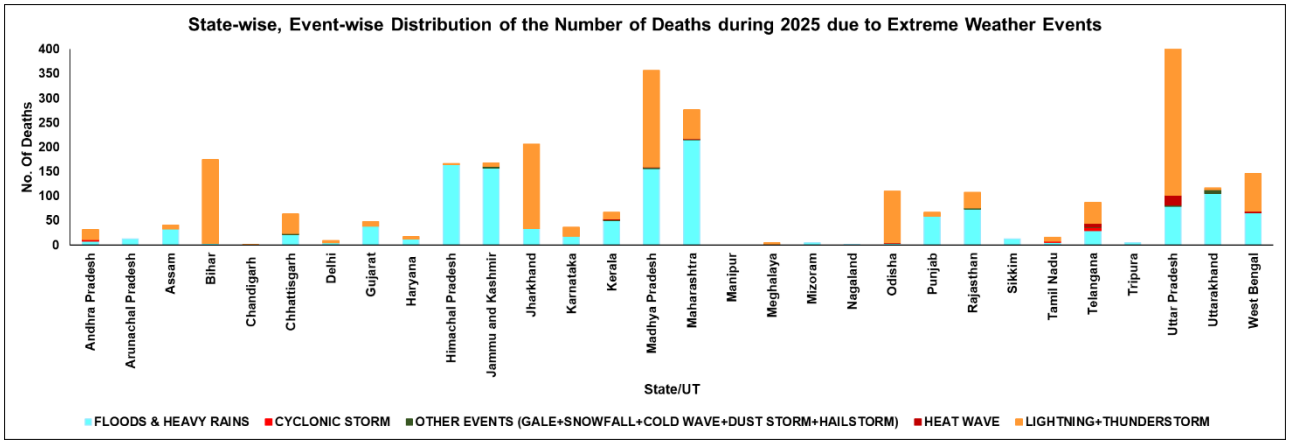

चित्र. 5 (ग): 2025 के दौरान चरम मौसम की घटनाओं के कारण होने वाली मौतों का राज्य-वार वितरण।

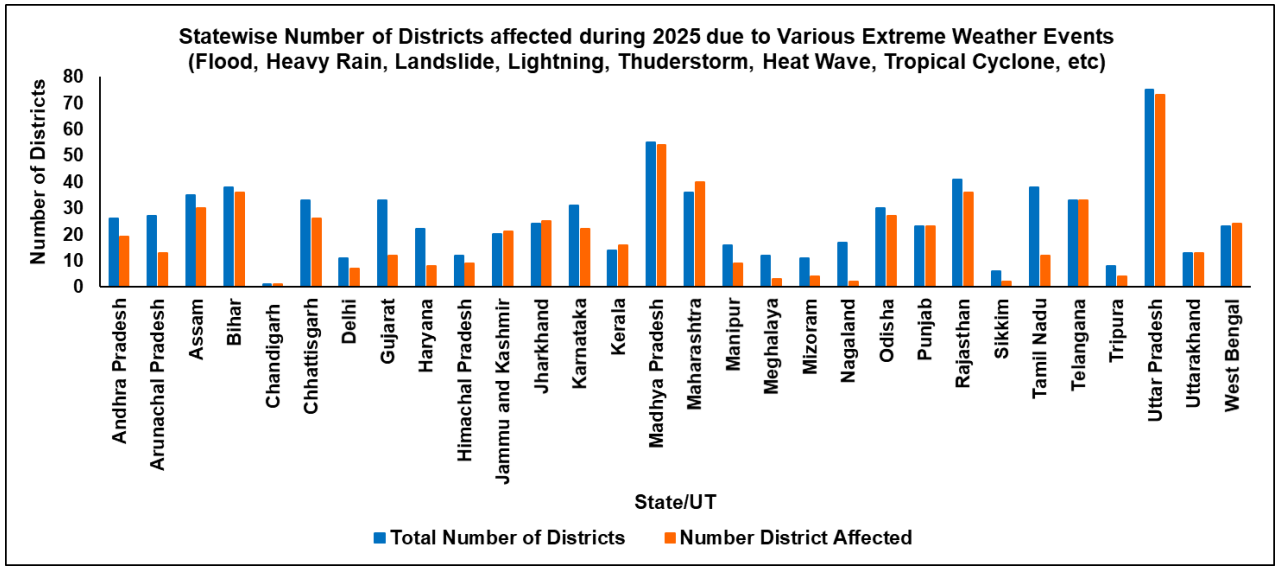

चित्र. 5 (घ): 2025 के दौरान विभिन्न चरम मौसम घटनाओं के कारण प्रभावित जिलों की राज्य-वार संख्या।